Content

विषयानुक्रम

प्रथम अध्याय		बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के हिन्दी उपन्यासों की केन्द्रीय सोच एवं बदलते जीवन मूल्य	१–४८
१.१		सन् १९०० ई. से १९१८ ई. तक के उपन्यास	४
१.२		सन् १९१८ ई. से १९५० ई. तक के उपन्यास	१४
१.३		सन् १९५१ ई. से १९८० ई. तक के उपन्यास	२६
१.४		सन् १९८० ई. से अब तक के उपन्यास	३८
द्वितीय अध्याय		सन् १९७० ई. के बाद के कुछ प्रमुख उपन्यास एवं उपन्यासकारों का परिचय	४९–१२०
२.१		भीष्म साहनी	५१
२.२		शिवाजी सावन्त	५६
२.३		जगदीश चन्द्र	५९
२.४		रामदरश मिश्र	६३
२.५		कृष्णा सोबती	६७
२.६		चन्द्रकान्ता	७१
२.७		श्री लाल शुक्ल	७६
२.८		मैत्रेयी पुष्पा	८१
२.९		डॉ. सूर्यदीन यादव	८७
२.१०		प्रभा खेतान	९१
२.११		अनामिका	९९
२.१२		भगवान दास मोरवाल	१०४
२.१३		कमलेश्वर	११४
तृतीय अध्याय		सन् १९७० ई. के परीवर्ती उपन्यासों में निहित आक्रोश एवं विद्रोह की विभिन्न मन:स्थितियाँ	१२१–२२२
३.१		आक्रोश की विभिन्न मन:स्थितियाँ	१२३–१६३
	३.१.१	धार्मिक आक्रोश	१२३
	३.१.२	मध्यवर्ग का आक्रोश	१३२

	३.१.३	ग्रामीण आक्रोश	१३९
	३.१.४	दलित वर्ग का आक्रोश	१४८
	३.१.४	नवयुवक आक्रोश	१५६
३.२		विद्रोह की विभिन्न मन:स्थितियाँ	१६४-२२२
	३.२.१	सामाजिक विद्रोह	१६४
	३.२.२	आर्थिक विद्रोह	१६९
	३.२.३	पारिवारिक विद्रोह	१७६
	३.२.४	राजनीतिक विद्रोह	१८३
	३.२.५	मानसिक विद्रोह	१९०
	३.२.६	नारी विद्रोह	१९७
	३.२.७	ऐतिहासिक विद्रोह	२०८
	३.२.८	आधुनिक विद्रोह	२१७
चतुर्थ अध्याय		विवेच्यकाल के उपन्यासों में समाज, धर्म, राजनीति एवं व्यवस्था के प्रति विद्रोह तथा आक्रोश की मन: स्थितियाँ	२२३-२४५
४.१		विवेच्यकाल में सामाजिक आक्रोश एवं विद्रोह	२२५
४.२		विवेच्यकाल में धार्मिक आक्रोश एवं विद्रोह	२२८
४.३		विवेच्यकाल में राजनीतिक आक्रोश एवं विद्रोह	२३२
४.४		विवेच्यकाल में व्यवस्था के प्रति आक्रोश एवं विद्रोह	२३८
पंचम अध्याय		कथानक, पात्रों एवं सवादों में व्यक्त आक्रोश के स्वर	२४६-२७८
५.१		कथानक में व्याप्त आक्रोश के स्वर	२४८
५.२		पात्रो में व्याप्त आक्रोश के स्वर	२६०
५.३		संवादो में व्याप्त आक्रोश के स्वर	२७०
षष्टम् अध्याय		सन् १९७१ ई. से लेकर १९९० के मध्य भाषा एवं शिल्प शैली का वर्णन	२७९-२९६
सप्तम् अध्याय		मौलिक प्रदान तथा मूल्यांकन	२९७-३०२
		शोध-ग्रन्थ सूची	३०३-३१४